❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर
MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें 9650183336, 9540040339

वर्ष 47, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 दिसम्बर, 2023 से रविवार 31 दिसम्बर, 2023
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें-www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में
समस्त आर्य संस्थानों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में

महान क्रान्तिकारी, शिक्षाविद्, सर्वस्व त्यागी, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

97वें बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा एवं श्रद्धांजलि सभा

आर्यसमाज के कारण ही जीवित है भारतीय संस्कृति - किरण चोपड़ा, निदेशक, पंजाब केसरी

अपने आदर्शों और धर्म की शिक्षाओं पर अड़िग रहे हिन्दू समाज - तुफैल चतुर्वेदी, प्रख्यात वक्ता

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को गलत हाथों में नहीं जाने देगा आर्यसमाज -आचार्य ऋषिपाल

आर्य समाज का इतिहास सदा त्याग, तपस्या और बलिदान को समर्पित रहा है। भारत राष्ट्र की गौरवशाली वैदिक संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों के संरक्षण तथा संवर्धन सहित आजादी से लेकर मानव सेवा एवं राष्ट्र निर्माण के लिए प्रतिबद्ध आर्य समाज के महापुरुषों ने समय-समय पर अपने अमर बलिदानों से संपूर्ण मानव जाति को उपकृत किया है। आर्य समाज के संस्थापक, युग प्रवर्तक, महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रमुख शिष्यों में तप, त्याग और साधना की प्रतिमूर्ति, बिछड़ों को गले लगाने वाले, दलितों का उद्धार करने वाले, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के संरक्षक, मानवता के संपोषक स्वामी श्रद्धानन्द ज़ी का 97वां बलिदान दिवस, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में समस्त आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, वेद प्रचार मंडलों, आर्य

- शेष पृष्ठ 4-5-6 पर

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव महासम्मेलन
10-11-12 फरवरी, 2024 : ऋषि जन्मभूमि टंकारा (गुज०)
तैयारियां हुईं तेज : भारत सहित विदेशों से भी पधारेंगे लाखों आर्यजन

दो वर्षीय कार्ययोजना हेतु सभी प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों की बैठक सम्पन्न

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति द्वारा शनिवार 16 दिसम्बर को आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में आमन्त्रित बैठक में उपस्थित प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं आयोजन समिति अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य।

देववाणी-संस्कृत

द्वेष से दूर

वेद-स्वाध्याय

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽ व यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाँसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।।-ऋ० 4/1/4
ऋषिः **वामदेवः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **अग्ने** = हे अग्ने! **त्वम्** = तुम **वरुणस्य** = वरुण के, पापनिवारक देव के, उसके पापबन्धन के विषय में **विद्वान्** = पूरी तरह जानते हुए **देवस्य** = देव के **हेडः** = अनादरों को **नः** = हमसे **अवयासिसीष्ठाः** = दूर करो। तुम **यजिष्ठः** = यजनीयतम **वह्नितमः** = सबसे बड़े वाहक **शोशुचानः** = और अत्यन्त प्रदीप्त हो, तुम **अस्मत्** = हमसे **विश्वा द्वेषांसि** = सब द्वेषों को **प्रमुमुन्धि** = पूरी तरह छुड़ा दो।

विनय - देवों का अनादर करना बड़ा अनर्थकारी होता है। जब हम प्रकृति के देवों का, उनके नियमों की अवज्ञा कर अनादर करते हैं, या मनुष्य-देवों (विद्वानों) का उनके उपदेशों की अवहेलना कर अनादर करते हैं, उस समय हम (न जानते हुए भी) पाप-बन्धन में गिर जाते हैं, क्योंकि हे अग्ने! ज्यों ही हम किसी धर्म-मर्यादा का उल्लंघन करते हैं तुम्हारी पापनिवारक वरुण शक्ति मानो रोषयुक्त होकर उसी समय हमें बाँध लेती है और इस बन्धन से फिर हमें तभी छुटकारा मिलता है जब हम पर्याप्त दुःख भोग चुकते हैं, इसलिए हे अग्ने! तुम तो विद्वान् हो, सर्वज्ञ हो, हमारे पाप-बन्धन (वरुण) के विषय में सब-कुछ जानते हो। तुम्हीं ऐसी कृपा करो कि हम अब इन देवहेडनों (देवों के अनादरों) से दूर रहें, बचे रहें और हम कभी तुम्हारे वरुण के क्रोध के भाजन न हों, परन्तु यह तभी हो सकता है जब हमारा द्वेषों से छुटकारा हो चुका हो। हम देवों का अनादर इसीलिए करते हैं, क्योंकि हम किन्हीं तीव्र राग-द्वेषों में फँसे होते हैं, अतः हे अग्ने ! पहले तो तुम हमें द्वेष, क्रोध, हिंसा, अन्याय आदि के जंजाल से मुक्त करो। तुमसे बढ़कर इस संसार में हमारे लिए कोई यजनीय नहीं है। तुम यजनीयतम हो। यदि तुम्हारी दया से हममें यह यज्ञभावना जाग्रत् रहे, तब तो हममें द्वेष उत्पन्न ही न हो सकें, पर यदि ये उत्पन्न हों, तो भी हे वह्नितम! हे सर्वश्रेष्ठ वाहक! शुभ गुणों को प्राप्त करानेवाली तुम्हारी वाहकशक्ति के कारण ये द्वेष मुझमें ठहर न सकें, स्थिर न हो सकें और यदि ठहर भी जाएँ तो हे शोशुचान! अत्यन्त प्रदीप्त अग्ने! तुम इन्हें अपने जाज्वल्यमान तेज से भस्म कर दो, राख कर दो। अपने इन उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय के त्रिविध रूप द्वारा इस प्रकार तुम हममें से द्वेषों को समाप्त कर दो, हे अग्ने! हमारा द्वेषों से सर्वथा छुटकारा कर दो।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती : नशा हटाओ-यौवन बचाओ

नशीली मौत का खेल - कौन शिकार - कौन है शिकारी?

कभी मुकेश की आवाज में राजकपूर ने फिल्माया 'मुझको यारों माफ करना मैं नशे में हूँ', कभी नसरुद्दीन के हाथ में बोतल दिखी कि -बरसात के मौसम में तन्हाई के आलम में घर से निकल आया बोतल भी उठा लाया, कभी कर्मा फिल्म में अनिल और जैकी ने कहा 'बड़े दिनों के बाद मिली है ये दारू दे दारू दे दारू', तो इससे आगे बढ़ते हुए हनी ने गाया - 'चार बोतल वोडका काम मेरा रोज का', 'खा के पान बनारस वाला' हो या 'शिवशंकर के नाम पर प्याला' सब कुछ इसी बॉलीवुड ने कला संगीत के नाम पर दिया। अब तो ये गुटके और शराब का विज्ञापन कर तक रहे हैं।

एक संस्था है केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण इस संस्था ने पान, गुटका तम्बाकू के विज्ञापन करने के लिए शाहरुख खान, अक्षय कुमार, अजय देवगन को शो-कॉज़ नोटिस भेजा था। लेकिन जब इन्हें को फर्क नहीं पड़ा तो अब प्रयागराज हाईकोर्ट का दखल भी बढ़ चला है। दरअसल ये पूरा मामला वकील मोतीलाल यादव की याचिका से जुड़ा है। मोतीलाल ने हानिकारक प्रोडक्ट्स का विज्ञापन करने वाली मशहूर हस्तियों - खासकर 'पद्म पुरस्कार विजेताओं' को जवाबदेह ठहराने की अपील की है। कहा कि ऐसे प्रोडक्ट्स बड़े पैमाने पर जनता के लिए हानिकारक हैं और अगर कोई पुरस्कार विजेता उचित आचरण नहीं करता है। हानिकारक प्रोडक्ट्स को बढ़ावा देता है, तो उसका पुरस्कार रद्द करने के लिए दिशानिर्देश जारी किए जाने चाहिए। इस याचिका में अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान, अक्षय कुमार, अजय देवगन, सैफ अली खान समेत क एक्टर्स और पान-गुटखा कंपनियों के नाम शामिल हैं। 2022 में मोतीलाल यादव ने हाई कोर्ट का रुख किया था। फ़िल्मी अभिनेताओं के खिलाफ कार्रवाई करने और जुर्माना लगाने की मांग की थी कि विज्ञापन से कमाए पैसे भारत सरकार के राहत कोष में जमा किए जाएं। ऐसे ही पिछले दिनों तमिलनाडु में गुटखा-पान मसाला की बिक्री पर पाबंदी के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर बहस के दौरान दिलचस्प खेल लोगों के सामने आया था।

दरअसल थोड़े समय पहले गुटके पर प्रतिबंध की बात चली थी। कुछ जगह इसे प्रतिबंध भी किया गया तो अचानक गुटका कम्पनियों ने दो पाउच तैयार किये। एक सुपारी, दूसरा तम्बाकू कानून की पकड़ से बचने के लिए दोनों चीजों को अलग-अलग पैक कर बेचा जाता है और बाद में लोग दोनों को मिक्स कर लेते हैं। ऐसे में वो गुटखा बन जाता है। कम्पनी कह देती है कि वो तो गुटका बेच ही नहीं रही पान मसाला बेच रही है। जब यह जानकारी सामने आई तो जस्टिस बी वी नागरत्ना की पीठ ने सुनवाई करते हुए तमिलनाडु सरकार से पूछा, कोई अमृत थोड़े ही बेचा जा रहा है। गुटखा बिक्री पर स्थाई पाबंदी क्यों नहीं लगाते?'

जिसका जवाब देते हुए तमिलनाडु सरकार की और गुटके की पैरवी कर रहे अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा, इस पर पूरी तरह से पाबंदी नहीं लगा सकते, क्योंकि कंपनियां पान-मसाला और तंबाकू अलग-अलग पाउच में बेचती हैं। लोग अलग-अलग पाउच खरीदते हैं और मिलाकर गुटखा बना लेते हैं। अब आप ही बताइए कि तंबाकू और पान मसाले की खरीद-फरोख्त पर कैसे पाबंदी लगा जाए?'

यानि लोगों को मौत के मुंह तक ले जाने के लिए सब एक जाते है। आज अक्षय कुमार भी जुबां केसरी है और शाहरुख़ खान भी। अमिताभ बच्चन, अजय देवगन, सैफ अली खान से कई फ़िल्मी अभिनेता है जो खुलकर नशे के विज्ञापन कर रहे है। आप सोचिये मुनाफे के इस बाजार में किसे क्या मिलता है। एक कम्पनी जो पान मसाला के नाम पर गुटके बना रही है वो विज्ञापन के लिए इन अभिनेताओं करोडो रुपया देती है, वो ये विज्ञापन किसी राह चलते या अजनबी से क्यों नहीं कराती! क्योंकि वो जानती है कि लोग इन फ़िल्मी सितारों को फॉलो करते है तो जब वो जुबां केसरी करेंगे तो आम लोग भी देश का युवा भी और बच्चे भी जुबां केसरी करेंगे। खैर कम्पनी ने गुटका पान मसाला बना लिया। मोटी रकम देकर विज्ञापन भी शूट करा लिया। अब अगली कमाई होगी ओटीटी प्लेटफार्म से लेकर टीवी चैनल और न्यूज़ चैनल्स की। वो मोटी रकम लेकर इस विज्ञापन को अपनी खबरों या प्रसारण के बीच जनता तक पहुंचा देंगे।

अब आगे स्टॉकिस्ट माल को छोटे दुकानदार तक पहुंचा देगा, जहाँ वो आम लोगो के मुंह में होगा। लेकिन खेल अभी बंद नही हुआ साल 2020 में गुटके तम्बाकू से 12 लाख 80 मौते हुई थी। ये सरकारों के लिए बड़ा आंकड़ा था तो इससे निपटने के लिए सरकार ने बस इतना किया कि पहले सिगरेट के डब्बे के 40 प्रतिशत हिस्से में स्वास्थ्य से जुड़ी चेतावनी होती थी अब ये दायरा बढ़ाकर 80 प्रतिशत कर दिया गया। जब मौत के आंकड़े बढे एक सितंबर, 2018 से एक और सूचना जोड़ी गई। तंबाकू प्रोडक्टस पर लत छोड़ने के लिए हेल्पलाइन नंबर दे दिया गया। यानि जहाँ अब तक कम्पनी विज्ञापन करने वाला बॉलीवुड गैंग विज्ञापन परोसने वाले टीवी- न्यूज़ चैनल्स और टैक्स से सरकार का मुनाफा हो रहा था। वहां अब एक चीज लत छोड़ने के लिए हेल्पलाइन नंबर दे दिया गया। यानि आगे जो जेब में बचा है उसे हेल्पलाइन पर दे दीजिये।

- शेष पृष्ठ 6 पर

..... तमिलनाडु सरकार की और गुटके की पैरवी कर रहे अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा, इस पर पूरी तरह से पाबंदी नहीं लगा सकते, क्योंकि कंपनियां पान-मसाला और तंबाकू अलग-अलग पाउच में बेचती हैं। लोग अलग-अलग पाउच खरीदते हैं और मिलाकर गुटखा बना लेते हैं। अब आप ही बताइए कि तंबाकू और पान मसाले की खरीद-फरोख्त पर कैसे पाबंदी लगा जाए?' ....

.....लोगों को मौत के मुंह तक ले जाने के लिए सब एक जाते है। अक्षय कुमार भी जुबां केसरी है और शाहरुख़ खान भी। अमिताभ बच्चन, अजय देवगन, सैफ अली खान से कई फ़िल्मी अभिनेता है जो खुलकर नशे के विज्ञापन कर रहे है। आप सोचिये मुनाफे के इस बाजार में किसे क्या मिलता है। एक कम्पनी जो पान मसाला के नाम पर गुटके बना रही है वो विज्ञापन के लिए इन अभिनेताओं करोडो रुपया देती है, वो ये विज्ञापन किसी राह चलते या अजनबी से क्यों नहीं कराती! क्योंकि वो जानती है कि लोग इन फ़िल्मी सितारों को फॉलो करते है तो जब वो जुबां केसरी करेंगे तो आम लोग भी देश का युवा भी और बच्चे भी जुबां केसरी करेंगे। खैर कम्पनी ने गुटका पान मसाला बना लिया। मोटी रकम देकर विज्ञापन भी शूट करा लिया। अब अगली कमाई होगी ओटीटी प्लेटफार्म से लेकर टीवी चैनल और न्यूज़ चैनल्स की। वो मोटी रकम लेकर इस विज्ञापन को अपनी खबरों या प्रसारण के बीच जनता तक पहुंचा देंगे। ....

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की प्रारम्भिक दशा

(ई० 1863 से 1866 तक)

गतांक से आगे -

यह समझना भूल है कि महर्षि दयानन्द ने गुरु के पास से आते ही सुधार का पूरा कार्यक्रम विस्तीर्ण कर दिया था। गुरु से विदा होने के समय महर्षि जी के पास ये वस्तुएं थीं- (1) उनके पास संस्कृत-व्याकरण और दर्शनों का पाण्डित्य था; (2) अखण्ड ब्रह्मचर्य, प्रतिभा, उत्साह और व्याख्यान-शक्ति के गुण थे; (3) विद्वानों, साधुओं और पन्थाइयों की दशा देखकर यह निश्चय हो चुका था कि धर्म की दशा बिगड़ी हुई है। सुधार करने और विशुद्ध धर्म का प्रचार करने की अभिलाषा विद्यमान थी। एक सुधारक में जिन गुणों की बीजरूप से आवश्यकता होती है, वे महर्षि दयानन्द में विद्यमान थे। साथ ही यह भी निश्चित है कि सुधार कार्य के यौवन में महर्षि दयानन्द के शस्त्रागार में जो-जो साधन सन्नद्ध हो गए थे, अभी उनमें से कुछेक का विकास होना बाकी था- (1) अभी महर्षि जी को वेद पूर्णत: प्राप्त नहीं हुए थे। वेदों की पुस्तकों तक की खोज अभी शेष थी; उनकी व्याख्या या उनमें एकान्त भावना की अभी चर्चा तक नहीं थी; (2) संसार का विस्तृत ज्ञान संसार में भ्रमण करने पर ही प्राप्त होता है। अभी तक गृहस्थों और पुजारियों की सृज्टि में अधिक प्रवेश का अवसर न मिलने से रोग का पूरा-पूरा ज्ञान भी नहीं हुआ था; (3) रोग का ज्ञान होने पर भी सुधाररूपी दवा का ठीक प्रयोग तभी हो सकता है, जब वैद्य भी कुछ परीक्षण कर ले। वैद्य पहले एक दवा का प्रयोग करता है, फिर उसके फल यदि सन्तोषदायक हो तो उसी को जारी रखता है, अन्यथा बदल देता है। चतुर-से-चतुर वैद्य भी ठीक परीक्षण करके ही ठीक औषध पर पहुंचता है।

पहले तीन साल तक महर्षि दयानन्द ने जो सुधार का कार्य किया, वह एक प्रकार से परीक्षणात्मक था। वह उस सर्वतोगामी सुधार का प्रारम्भिक पड़ाव था, जो कुछ वर्ष पीछे भारत के विशाल कार्य को प्रकम्पित कर देनेवाला था। हम इस प्रारम्भिक कार्य में भी उन सब गुणों को बीजरूप में पाते हैं, जो बाद में वृक्षरूप में परिणत होकर सफलता के साधन हुए; परन्तु बाद में सुधार के कार्यक्रम में जो पूर्णता आ गई थी वह अभी नहीं दिखाई देती।

सुधाररूपी चित्र की बाह्य रेखाएं तैयार थीं, परन्तु उसमें रंग और छाया का स्थान खाली था, जिसे भरने के लिए समय और अनुभव की आवश्यकता थी।

इन प्रारम्भिक तीन सालों में महर्षि जी ने जो सुधार उपस्थित किये, उनमें से और मुख्य स्थान मूर्ति पूजा के खण्डन का है। मूर्ति-पूजा में उनका विश्वास उसी क्षण से हिल चुका था, जिस क्षण उन्होंने शिवरात्रि की अँधियारी में शिवलिंग के ऊपर से चूहे को चावल उठाते हुए देखा था। उस समय जो अश्रद्धा उत्पन्न हुई, वह सत्संग, विद्याभ्यास और विचार से विरोधी विश्वास के रूप में परिणत हो गई। मूर्ति-पूजा को भ्रमात्मक मानकर परमात्मा के निराकार निर्दोष अद्वितीय स्वरूप का प्रतिपादन करना महर्षि दयानन्द का प्रारम्भ से ही लक्ष्य था। सुधारकों की कसौटी ईश्वर-सम्बन्धी विश्वास है। कोई सुधारक या धर्मसंस्थापक उपास्यदेव का जिस स्वरूप में प्रतिपादन करता है, उसी से उसकी ऊंच-नीच को परखा जाता है। ईश्वर-स्वरूप सम्बन्धी विचार धर्मो के नपैने हैं। कोई भी धर्मोपदेशक जनता में कोई भारी परिवर्तन नहीं उत्पन्न कर सकता, जब तक वह उनके मूल धार्मिक विचारों को नए रंग पर नहीं मोड़ देता। सुधारक यत्न करते हैं कि वे आम के पेड़ की पत्तियों में कलम लगाकर फल को मीठा बना सकेंगे, परन्तु निश्चय है कि वे निराश होंगे। ऐसे यत्न हुए और निष्फल हुए। जब तक तने में कलम नहीं लगती, तब तक फल मीठे नहीं हो सकते। महर्षि दयानन्द के हृदय में सुधारों की भावना का प्रारम्भ मूर्ति की सत्ता में अश्रद्धा होने से हुआ था। ईष्ठवर-सम्बन्धी अशुद्ध विचारों की जड़ में यह पहला कुठारपात था। ज्यों-ज्यों विद्या की वृद्धि होती गई, ज्ञान के चक्षु खुलते गए, सद्गुरुओं से उपदेश सुनने का अवसर मिलता गया, त्यों-त्यों वही प्रारम्भिक भावना अधिकाधिक पुष्ट होती गई।

- क्रमश:

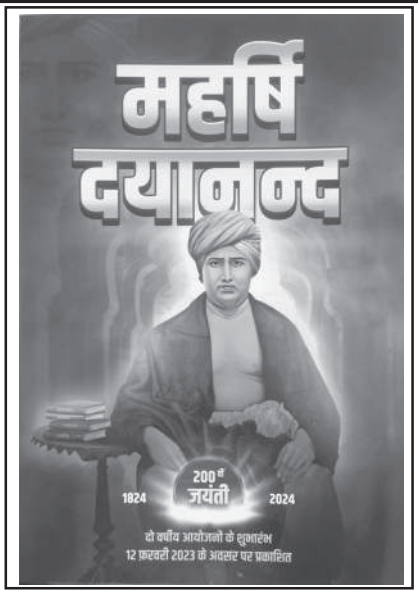

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

बाल बोध

मन की एकाग्रता से मिलेगी सफलता

गतांक से आगे -

...यह नियंत्रण वाली, उत्साह वाली शक्ति बाहर नहीं हमारे अंदर ही है, बस वहां तक जाना है, फिर उस शक्ति को विकसित करना है। उसमें आपको क्या खास करना है? हर विपरित स्थिति का आपको आनंद लेना है, अपनी संयम शक्ति का स्वाद लेना है, यह कैसे संभव होगा? जो चीज आपको पसंद है, वह नहीं खानी है। जो पीने वाली चीजें पसंद हैं, वे नहीं पीनी हैं। जहां रिश्तों में कड़वाहट है, कड़वे शब्द जहां कहे जाते हैं, जहां जवाब देना आपको अच्छा लग रहा है कि इसको एक के बजाए चार सुनाके आऊं, अगर वहां आप स्वयं को मौन रख सके, उस स्थिति का आनंद ले सके तो फिर भीतर ऊर्जा बढ़ने लगेगी, आपको आनंद अनुभव होने लगेगा। यह आनंद का स्वाद बड़ा निराला होता है, इसे आप जब महसूस करेंगे तब इसके स्वाद का पता चलेगा। नियंत्रण-संयम शक्ति का स्वाद बड़ा अद्भुत होता है, इसलिए नियंत्रित करिए अपने आपको।....

जीवन में सफलता के लिए जरूरी - नियंत्रण शक्ति

प्यारे विद्यार्थियों, नियंत्रण शक्ति मनुष्य की महान शक्ति है। यह बिल्कुल वैसे ही है जैसे गाड़ी में ब्रेक! गाड़ी कितनी भी महंगी हो, कितनी भी आकर्षक हो, अगर उसमें ब्रेक नहीं हैं तो आप उसमें बैठकर सुरक्षित स्थान, अपनी मंजिल पर नहीं पहुंच सकते। इसी तरह कोई विद्यार्थी कितने महंगी फीस वाले, बड़े, उंचे नाम वाले स्कूल में पढाई क्यों न करें अगर उसका अपने उपर नियंत्रण नहीं है तो वह जीवन में सफलता नहीं पा सकता। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि विद्यार्थी नियंत्रण के नाम पर एक जगह रुककर ही बैठ जाए, अपनी उन्नति की गाडी में ब्रेक लगाकर ही बैठा रहे, अपनी अकर्मण्यता को ही नियंत्रण शक्ति समझने लगे तो इसका मतलब यह उसकी सबसे बडी भूल होगी। नियंत्रण का अर्थ है संतुलन, विद्यार्थी को अपनी वाणी से लेकर हर चेष्टा और प्रयास को संतुलन में रहकर करना चाहिए। आज मानव समाज में चारों तरफ अतिवादिता का बोलबाला है। या तो यहां लोग ज्यादा वाचाल मिलते हैं या ज्यादा चुपचाप रहते हैं। या तो लोग ज्यादा आक्रामक होते हैं या फिर सहनशील, या तो कोई दिन रात पढने वाले होते हैं या फिर पढने के नाम पर आलसी प्रमादी, या तो कोई अपने शरीर की उन्नति के लिए दिन रात मेहनती होते हैं, व्यायाम करते हैं या फिर बिल्कुल लापरवाह। लेकिन जीवन के सफर में सफलता उन्हें ही मिलती है जो लगातार नियंत्रण में रहकर आगे बढते हैं। जिनके खाने-पीने से लेकर बोलने, चलने, उठने, बैठने, हंसने-खेलने, सोने, जागने पढने-लिखने और मनोरंजन आदि सब दिनचर्या पूरी तरह नियंत्रण में होती है। उनके हर कार्य में पूरा संतुलन होता हैं। इसलिए जीवन में सफलता को चाहने वाले हर व्यक्ति को अपने मन में नियंत्रण-संयमन शक्ति को जागृत करना चाहिए। जहां, जिस स्थिति में आप स्वयं को रोकना चाहें वहां रोक लें, आपको यह समझ आ जाए कि मैं अपने आपको कहां रोकूंगा? कहां अपने आपको जोश दिलाउंगा? कहां मुझे तेजी से दौड़ना है, कहां धीरे-धीरे चलना है, किस क्षेत्र में कितनी गति करनी है? अगर रास्ता गलत है तो वहां स्वयं रुक जाऊं, वहां अपने आप ब्रेक लग जाएं, जैसे गाड़ी चलाने वाले ड्रॉइवर के सामने कोई आ जाए तो उसका पैर एक दम अपने आप ब्रेक पर चला जाता हैं।

यह नियंत्रण वाली, उत्साह वाली शक्ति बाहर नहीं हमारे अंदर ही है, बस वहां तक जाना है, फिर उस शक्ति को विकसित करना है। उसमें आपको क्या खास करना है? हर विपरित स्थिति का आपको आनंद लेना है, अपनी संयम शक्ति का स्वाद लेना है, यह कैसे संभव होगा? जो चीज आपको पसंद है, वह नहीं खानी है। जो पीने वाली चीजें पसंद हैं, वे नहीं पीनी हैं। जहां रिश्तों में कड़वाहट है, कड़वे शब्द जहां कहे जाते हैं, जहां जवाब देना आपको अच्छा लग रहा है कि इसको एक के बजाए चार सुनाके आऊं, अगर वहां आप स्वयं को मौन रख सके, उस स्थिति का आनंद ले सके तो फिर भीतर ऊर्जा बढ़ने लगेगी, आपको आनंद महसूस होने लगेगा। यह आनंद का स्वाद बड़ा निराला होता है, इसे आप जब महसूस करेंगे तब इसके स्वाद का पता चलेगा। नियंत्रण-संयम शक्ति का स्वाद बड़ा अद्भुत होता है, इसलिए नियंत्रित करिए अपने आपको।

फिर जागरूकता का स्वाद लीजिए- आलस्य नहीं करिए, मन कहता है कि आलस्य आ रहा है, बहाने बना देता है कि यह कार्य कल कर लेगें, परसों कर लेगें। इस टाल-मटोल से बचना है, मन को कहिए कि नहीं आज ही यह कार्य करना है, अभी करना है, जब आप आलस्य को जीतकर अपने कार्य को पूर्ण कर लेंगे, तब आपको अच्छा लगेगा, आनंद आएगा। फिर आपका मन एकाग्र होने लगेगा, आप अपने मन के मालिक बन जाएंगे। *- शेष पृष्ठ 7 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

97वें बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा एवं श्रद्धांजलि सभा

वीर दल, आर्य वीरांगना दल एवं समस्त आर्यजनों द्वारा 25 दिसंबर 2023 को विशाल शोभायात्रा और सार्वजनिक सभा के रूप में अत्यंत निष्ठा पूर्वक मनाया गया।

स्मरण रहे कि इन दो वर्षों में सम्पूर्ण आर्य जगत महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की वृहद श्रृंखला के भव्य और ऐतिहासिक आयोजन लगातार हो रहे हैं। इस क्रम में आर्यों की विशाल शोभायात्रा में आर्य समाज के अधिकारी, आर्यनेता, मूर्धन्य संन्यासीवृंद और हर आयु वर्ग के आर्य नर-नारी सम्मिलित थे। संपूर्ण शोभायात्रा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी और आर्य समाज की जय-जयकार होती रही। यह सर्वविदित है कि आर्य समाज का युवा संगठन मानव सेवा के लिए सदैव समर्पित भाव से कार्य करता रहा है। स्वामी श्रद्धनन्द जी के बलिदान दिवस पर आर्यवीर, वीरांगनाओं द्वारा शोभा यात्रा के दौरान लाठी, तलवार, नांचाक, मुगधड, योगासन, प्राणायाम आदि के विशेष प्रदर्शन किए गए। एक तरफ आर्य महापुरुषों के जय जयकार और दूसरी तरफ व्यायाम प्रदर्शन से समूचा क्षेत्र रोमांचित हो उठा। बीच-बीच में आर्य जनों द्वारा आर्य वीरों का उत्साह बढ़ाने के लिए तालियों की गड़गड़ाहट और स्वामी श्रद्धानन्द का जय जयकार होता रहा।

नया बाजार स्थित बलिदान भवन में शोभायात्रा से पूर्व यज्ञ का दृश्य

इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द के

- *जारी पृष्ठ 5-6 पर*

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन एवं कार्यों का स्मरण कराती शोभायात्रा में सम्मिलित विभिन्न झांकियां

97वें बलिदान दिवस के अवसर पर विशाल शोभायात्रा में सम्मिलित आर्य संन्यासीवृंद एवं विभिन्न विद्यालयों, गुरुकुलों, संस्थाओं, आर्य संगठनों के अधिकारी, सदस्य, कार्यकर्ता, विद्यार्थी, ब्रह्मचारी एवं आर्य वीर और वीरांगना दल के सदस्य शौर्य प्रदर्शन करते हुए

रामलीला मैदान में सम्पन्न श्रद्धांजलि एवं जनसभा में उपस्थित आर्यजनों का अपार समूह स्वामी श्रद्धानन्द जी की विरासत को बचाने का संकल्प लेते हुए

बलिदान दिवस पर जनसभा को सम्बोधित करते मुख्य वक्ता श्री तुफैल चतुर्वेदी एवं मुख्य अतिथि श्रीमती किरण चोपड़ा

सम्मान : श्रीमती हर्ष आर्या, आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, एवं श्री संजय कुमार को पुरस्कार से प्रदान करते सर्वश्री सतीश चड्डा, सुरेन्द्र रैली, श्रीमती उषा किरण आर्या, स्वामी सच्चिदानन्द, धर्मपाल आर्य, अजय सहगल,जोगेन्द्र खट्टर एवं श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी। मुख्य अतिथि श्रीमती किरण चोपड़ा जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते श्री धर्मपाल आर्य, श्री कीर्ति शर्मा, श्रीमती उषा किरण आर्या एवं श्रीमती रचना आहूजा।

विशेष सम्मान : आर्य प्रतिनिधि सभा असम के प्रधान श्री महेन्द्र सिंह राजपूत एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री अवनीभूषण पुरंग जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री सुरिन्द्र चौधरी।

लोकार्पण एवं विमोचन – महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती का शुभकामना बैनर एवं डॉ. विवेक आर्य जी की पुस्तकों का विमोचन करते सर्वश्री कीर्ति शर्मा, धर्मपाल आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, सुरेन्द्र रैली, उषा किरण आर्या, किरण चोपड़ा, सुभाष दुआ, कन्हैया लाल आर्य, स्वामी सच्चिदानन्द, आचार्य ऋषिपाल, नितिञ्जय चौधरी, वागीश शर्मा, एवं आचार्य प्रेमपाल शास्त्री।

सांस्कृतिक प्रस्तुति : बलिदान दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक प्रस्तुति देती आर्य वीरांगना दल जनकपुरी की कन्याएं

सांस्कृतिक प्रस्तुति : स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित नाटिका का मंचन करते आर्य वीर दल आर्यसमाज कीर्ति नगर युवा

कुछ मित्रों ने अभी से नव वर्ष की अग्रिम शुभकामना देना प्रारम्भ कर दिया है, इस परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत है राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता– सम्पादक

ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं – है अपना ये त्यौहार नहीं

ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं,
है अपनी ये तो रीत नहीं,
है अपना ये व्यवहार नहीं,
धरा ठिठुरती है सर्दी से,
आकाश में कोहरा गहरा है।
बाग़ बाज़ारों की सरहद पर,
सर्द हवा का पहरा है।।
सूना है प्रकृति का आँगन,
कुछ रंग नहीं, उमंग नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं.......

हर कोई है घर में दुबका हुआ,
नव वर्ष का ये कोई ढंग नहीं।
चंद मास अभी इंतज़ार करो,
निज मन में तनिक विचार करो।
नये साल नया कुछ हो तो सही,
क्यों नक़ल में सारी अक्ल बही।
उल्लास मंद है जन–मन का,
आयी है अभी बहार नहीं,
ये नव वर्ष हमे स्वीकार नहीं......

ये धुंध कुहासा छंटने दो,
रातों का राज्य सिमटने दो,
प्रकृति का रूप निखरने दो,
फागुन का रंग बिखरने दो,
प्रकृति दुल्हन का रूप धार,
जब स्नेह सुधा बरसायेगी।
शस्य–श्यामला धरती माता,
घर–घर खुशहाली लायेगी।
तब चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि,
नव वर्ष मनाया जायेगा।
आर्यावर्त की पुण्य भूमि पर,
जय गान सुनाया जायेगा।
युक्ति प्रमाण से स्वयंसिद्ध,
नव वर्ष हमारा हो प्रसिद्ध।
आर्यों की कीर्ति सदा–सदा,
नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा।
अनमोल विरासत के धनिकों को,
चाहिये कोई उधार नहीं।
ये नव वर्ष हमे स्वीकार नहीं...

है अपना ये त्यौहार नहीं,
है अपनी ये तो रीत नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं,
ये नव वर्ष हमे स्वीकार नहीं।।

– *राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'*

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर शुभकामनाओं के बैनर अपने घर, आर्य समाज और क्षेत्र में अच्छे स्थानों पर लगवायें

साइज 3 x 2 फुट

मूल्य ₹250 में 25 बैनर

वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली
www.vedicprakashan.com / +91-9540040339

वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

1200/–रुपये सैंकड़ा

100 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। - 9540040339

पृष्ठ 4-5 का शेष

वीरता के दृश्य, भजन और अनेक अन्य प्रेरक कार्यों का प्रदर्शित झांकियों से सम्मिलित दोपरहर एक बजे यह विशाल शोभायात्रा एक सार्वजनिक सभा के रूप में परिवर्तित हुई, जहाँ पर स्वामी श्रद्धानन्द को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देते हुए सभी आर्य नेताओं ने विशेष उद्बोधन दिए।

सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन में आर्य समाज नया बांस के पुरोहित श्री सहदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सामूहिक यज्ञ किया। तदोपररांत वहां से विशाल शोभायात्रा शुरू हुई, जिसका शुभारंभ स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, सुरेंद्र रैली जी, प्रधान, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्रीमती उषा किरण जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, उपप्रधान, आर्य सतीश चड्ढा, महामंत्री, सुरिन्दर चौधरी जी, डॉ मुकेश आर्य जी, मंत्री, आर्य केंद्रीय सभा, श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान, श्री विनय आर्य जी, महामंत्री, श्री सुखवीर सिंह जी, मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमती रचना आहूजा प्रधाना, प्रान्तीय आर्य महिला सभा, श्री सुभाष दुआ, मंत्री अ. भा. दयानन्द शुद्धि सभा, श्रीमती शारदा वर्मा जी, संचालिका, आर्य वीरंगना दल और श्री सुरेश टंडन जी, आर्य समाज न्यू मोती नगर, श्री राजकुमार जी, न्यू मुल्तान नगर और दिल्ली के समस्त क्षेत्रीय वेदप्रचार मंडलों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों इत्यादि ने शोभा यात्रा की अग्रिम पंक्ति में नेतृत्व प्रदान किया।

आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दल, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, आर्यसमाजों के अधिकारियों, कार्यकर्ता, सदस्यों सहित हर आयु वर्ग के स्त्री-पुरुषों ने शोभायात्रा को विराट स्वरूप प्रदान किया। आर्यों की यह शोभायात्रा गत वर्षा की भांति आर्य समाज की शक्ति का प्रदर्शन करते हुए, महर्षि दयानन्द सरस्वती का जय-जयकार करते हुए, आर्य समाज और ओम का झंडा ऊंचा रहे के गगन भेदी नारे लगाते हुए स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार से प्रारंभ होकर, लाहौरी गेट, खारी बावली, फतेहपुरी, चांदनी चौक, न सड़क, हौजकाजी चौक, अजमेरी गेट, आसफ अली रोड होते हुए अपनी अपार सफलताओं के साथ रामलीला मैदान में एक सार्वजनिक सभा के रूप में परिवर्तित हुई।

इस अवसर पर श्रीमती संगीता आर्या जी ने आर्य समाज, महर्षि दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की महिमा का बखान करते हुए सारगर्भित मधुर भजनों से सारे वातावरण को भक्ति भाव से सराबोर कर दिया। इसके उपररांत आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान और कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र रैली जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के तप, त्याग और मानव समाज के उन पर किए गए अनगिनत उपकारों को स्मरण करे हुए वर्तमान परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करने के लिए उपस्थित आर्यजनों का आहवान किया। आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी को उनके 97वें बलिदान दिवस परर भावपूर्ण श्रद्धां सुमन अर्पित करते हुए अंधविश्वास और कुरीतियों को उखाड फेंकने की बात कही। कार्यक्रम में मंच पर मुख्य अतिथि श्रीमती किरण चोपड़ा जी, निदेशक पंजाब केसरी, मुख्य वक्ता श्री तुफैल चतुर्वेदी, सुविख्यात प्रवक्ता और इस्लाम के प्रवक्ता, सारस्वत अतिथि श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र जी, श्रीमती उषा किरण कथूरिया जी, श्री अजय सहगल जी, श्री कीर्ति शर्मा जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री विनय आर्य जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री आर्य सतीश चड्ढा, इत्यादि महानुभाव उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में स्मृति पुरस्कार आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र जी को पं. ब्रह्मानन्द कार्यकर्ता पुरस्कार, श्री संजय कुमार जी को तथा श्री योगेश आर्य स्मृति पुरस्कार श्रीमती हर्ष आर्या जी को दे कर सम्मानित किया गया।

शोभायात्रा के विशेष आकर्षण आर्यों की इस विशाल शोभायात्रा में हर आयु वर्ग के स्त्री पुरुष पूरे अनुशासन और व्यवस्था के साथ चले। विभिन्न विद्यालयों एवं गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं और उनके शिक्षक वर्ग शोभायात्रा को चार चांद लगा रहे थे। बहुत सारी संस्थाओं के सदस्य विभिन्न वाहनों जैसे बस, टेंपो ट्रेवलर, गाड़ियां कारणों से स्कूटर से शोभायात्रा में भाग ले रहे थे। सर्द हवाओं के बीच, छोटे छोटे विद्यार्थियों और उनके शिक्षकों को विशेषकर धन्यवाद।

शोभायात्रा की शोभा बढ़ाने के लिए, 1- यज्ञ का महत्व और हमारे आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम राम माता सीता के साथ, योगीराज श्रीकृष्ण माता रुक्मणी के साथ तथा तपस्वी शिव जी एवं माता पार्वती के साथ यज्ञ करते हुए के दृश्य प्रदर्शित करते हुए, 2-श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा 200वर्ष का लोगो, वेदों तथा सत्यार्थ प्रकाश के दृश्य प्रदर्शित करते हुए, 3-आर्य कन्या गुरुकुल का दृश्य आर्य समाज सी 3, जनकपुरी द्वारा, 4-अखिल भारतीय दयानन्द सेवा आश्रम संघ द्वारा विद्याधन-महादान के लिए वनवासी क्षेत्र के विद्यालयों के भवनों के दृश्य,- 5 आर्य समाज सूरजमल विहार द्वारा यज्ञ का महत्व समझाते हुए, 6-अखिल भारतीय शुद्धि सभा द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन, पुण्य भूमि और उनका जामा मस्जिद तथा अकाल तख्त, स्वर्ण मंदिर पर हो रहे प्रवचन के दृश्य, 7-आर्य समाज प्रीत विहार द्वारा आर्य वीरों द्वारा योगासन तथा मलखम के दृश्य, 8-अखिल भारतवर्षीय दलितोद्धार सभा द्वारा इतिहास, उद्देश्य तथा गले लगाओ दृश्य का प्रस्तुतिकरण किया। आर्य समाज कीर्ति नगर द्वारा आर्य वीरों का सुंदर प्रदर्शन करते हुए झांकी और अनेक सेवा कार्यों की झांकियां आर्य समाज के प्रेरक इतिहास और वर्तमान के सेवा कार्यों को प्रदर्शित कर रही झांकियां निकल गई। सबके मन को मोहित कर रही थी। सभी आर्य समाजों एवं संस्थाओं के अधिकारियों का बहुत-बहुत धन्यवाद। आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं तथा आर्य सदस्यों द्वारा शोभायात्रा का बीच बीच में, जैसे श्री प्रेम अरोड़ा, एम डी एच, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, गुरुकुल पुल बंगश, गोविन्दराम हंसाराम, आर्य विद्यालय चावडी बाजार, पेट्रोलियम पदार्थों की वेलफेयर एसोसिएशन, आर्यसमाज नया बांस, आर्य समाज सैनिक विहार, रेलवे रोड, रानी बाग, पंचदीप, नयाबांस, डी ब्लॉक विकास पुरी, सीताराम बाजार, दीवान हाल, कृष्णा नगर आदि आदि ने न केवल शोभा यात्रा के मार्ग में स्वागत किया बल्कि प्रसाद, विभिन्न वस्तुओं का, पानी का वितरण भी किया।

यह शोभायात्रा अपने पूरे दल बल के साथ लंबी यात्रा पूरी करके लगभग 1 बजे तक रामलीला मैदान में संपन्न हुई। इसके उपरांत मंचस्थ आर्य नेताओं सहित उपस्थित जनसमूह ने दो मिनट का मौन रहकर अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधरित नाटिका का मंचन राजू आर्य के नेतृत्व में आर्य समाज कीर्ति नगर, आर्य वीर, वीरांगनाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसे देखकर सभी आर्य जन भावविभोर हो गये। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर इस शोभायात्रा में भाग लिया, सभी का धन्यवाद।

विभिन्न व्यवस्थाओं की दृष्टि से शोभायात्रा के पूरे मार्ग के संचालन में, सर्वश्री, विनय आर्य, आर्य सतीश चड्ढा, अरुण प्रकाश वर्मा, जोगिदर खट्टर, सुरिन्दर चौधरी, डॉ मुकेश आर्य, संजीव खेत्रपाल, आचार्य अनिल शास्त्री, सुश्री शारदा वर्मा, विभा आर्या, प्रभा आर्य, हर्ष आर्या, आंकिता चौधरी, मीमांसा पंचाल, वंशिका आर्य तथा आर्य वीर दल के अधिकारी, भोजन व्यवस्था में श्री हरिओम बंसल, श्री अजय तनेजा एवं साथियों, आर्य समाज शाहाबाद मुहम्मदपरुर के सदस्यों, आर्य वीर दल के अधिकारियों, श्री जगबीर सिंह आर्य, श्री बृहस्परति आर्य, मंच व्यवस्था को संचालित करने में श्रीमती ऊषा किरण, श्री कीर्ति शर्मा, श्री अजय सहगल, श्री सुरिन्द्र चौधरी डॉ. मुकेश आर्य, पंडाल व स्टाल व्यवस्था में, श्री संजीव कोहली एवं श्री दिनेश शास्त्री, नया बांस ने रामलीला मैदान में, आर्य वीर दल की प्रदर्शन एवं गतिविधियों में श्री जगबीर सिंह आर्य, श्री बृहस्पति आर्य तथा अधिकारियों, संवधर्को द्वारा शोभायात्रा का सुसज्जित संचालन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, सभी का धन्यवाद व साधुवाद! श्री अश्वनी आर्य एवं श्री अमित शर्मा, आर्य संदेश मिडिया केन्द्र के सहयोगियों ने प्रसारण में, आचार्य श्री जयप्रकाश शास्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय के सहयोगियों का बहुत बहुत धन्यवाद।

- महामंत्री, आर्य सतीश चड्ढा

पृष्ठ 2 का शेष

नशीली मौत का खेल - कौन .....

लेकिन अभी खेल रुका नहीं, दवा कम्पनी का हिस्सा भी आ गया।

ओरल कैंसर यानि मुंह के कैंसर में साल 1990 से 2019 के बीच 147 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। वहीं ग्रसनी के कैंसर में भी 177 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। जबकि पूरे विश्व में इस समय काल दौरान सिर्फ 24.7 प्रतिशत का ही इजाफा देखा गया है।

भारत में 1990 में मुंह के कैंसर के मामले एक लाख में 5 लोगो को थे। जो 2019 में 14 हो गये। मुंह के कैंसर और ग्रास नली के कैंसर पर दुनियाभर के 204 देशों से लिये गए आंकड़े और 200 के करीब विशेषज्ञों के शोध में यह आंकड़ा सामने आया है। इस शोध को जामा ऑन्कोलॉजी नामक मासिक जर्नल में प्रकाशित किया गया है, जिसे अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन प्रकाशित करता है। उनके अनुसार यहां लगातार बढ़ रहे धूम्रपान, तंबाकू, गुटखा और केमिकल का अत्यधिक प्रयोग भारत इस तरह के मामलों के वृद्धि का प्रमुख कारण हैं। कैंसर से भारत में मृत्युदर में 167.5 फीसदी की बढ़ोतरी हुई। यानि कैंसर की दवा बनाने वाली विदेशी कंपनियों के लिए भारत में गुटके तम्बाकू से जो मुंह का कैंसर हो रहा है उससे बल्ले-बल्ले हो गयी। उनकी यह रिपोर्ट भले संवेदनशील लगे लेकिन इस संवेदनशीलता के पीछे भी कमाई का जरिया खोजा जा सकता है। भारत के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार साल 2011 में तंबाकू से हुई बीमारियों पर लोगों के 1450 करोड़ रुपए खर्च हुए। अब अगर इसकी तुलना 2021 में तंबाकू से सरकारी कमाई की करें तो लगभग 5000 करोड़ की आमदनी हुई। लोगों का बीमारी पर खर्च हुआ पन्द्रह हजार करोड़। आप ही समझिए ये कैसा गणित है। सरकार को हो रही कमाई से तीन गुना ज्यादा लोगों के इलाज पर खर्च हो रहा है।

2018-19 में तंबाकू पर लगने वाले केंद्रीय उत्पाद कर से 1234 करोड़, 2019-20 में 1610 करोड़ और 2020-21 में 5 हजार करोड़ रुपए बतौर टैक्स मिला। अब इसमें भी एक खेल है विश्व स्वास्थ्य संगठन यानि डब्लू.एच.ओ. की सिफारिशों के अनुसार तंबाकू के सभी उत्पादों के रीटेल प्राइस का 75 प्रतिशत टैक्स होना चाहिए। भारत में ऐसा नहीं है, सिगरेट के एक पैकेट के दाम में टैक्स सिर्फ 52.7 परसेंट है। गुटखे पर 63.8 परसेंट। कुछ जानकारों की माने तो जीएसटी आने के बाद तंबाकू उद्योग की चांदी हो गई है क्योंकि इस पर टैक्स का दायरा बढ़ नहीं रहा है।

इस कारण आज भारत तंबाकू सेवन के मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर है। 28 करोड़ लोग इसका सेवन करते हैं मसलन जितनी अमेरिका या पाकिस्तान की आबादी है उतने लोग तो हमारे यहाँ तम्बाकू गुटका खाते है। इनमें से 13 लाख हर साल मुंह में समा जाते हैं। भारत में कैंसर के सभी रोगियों में 27 परसेंट तंबाकू वाले हैं, तो सोचिये इस मौत के खेल में शिकारी कौन है शिकार कौन है? ये अरबों करोडो का खेल कैसे 5 या दस रूपये में में बोलो जुबां केसरी बोल कर लोगो को मौत की ओर आकर्षित करते है। सवाल है क्या इन बोलो जुबां केसरी के बच्चे भी ये गुटके और तम्बाकू खाते हैं? ऐसे विज्ञापन करने वाले ये लोग अभिनेता है हीरो है या फिर समाज के विलेन?

- सम्पादक

Continue From Last Issue

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

'Then Karan Singh got angry and talked senseless and started scolding him. Swamiji was not a man to be afraid of his warning. Swamiji condemned 'Chakrankit religeon' strongly and remarked "what type of a Kshatri are you who train the boys to play the role of Greatmen and dance on the stage of 'Ram Leela'? If some one prepares your mother or sister for the same part, what would you feel?"

Hearing this he was furiously angry. Eyes were quite red. He started breathing fast and put his hand on the sword. A wrestler (Pehlwan) who had come with him, tried to move towards Swamiji.

Swamiji caught him by hand and threw him away and roaring like a lion said to Karan Singh, "oh! uncivilized and cheat man! if you want to have a fight, go to Kings of Dhaulpur or Jaipur. If you want debate, send for your Guruji, Rangacharya from Vrindavan,"

Hearing this among many people sitting there,Thakur Karan Singh and other Rajpoots stood up and get ready with their sticks to challenge Karan Singh. Coward Karan Singh slipped away from there with his Pehlwans.

Many people requested Swamiji to report the incident to the Police. Swamiji gave reply that would be memorable for ever, "If he could not keep his Kshatiya Dharm, why should I leave my Sanyasi Dharm? To be peaceful and satisfied is our Dharm". After this incidence, Karan Singh had been trying to pacify his anger by so many dirty ways. He sent some Gundas to kill Swamiji. But hearing the 'Roar of the Lion', they ran away so dread that some of them fell on one another and some how escaped death. After that Karan Singh tried to prepare some Vairagis, but no one of them had courage to attack. Then well wishers of Swamiji surrounded Karan Singh's Banglow with sticks in their hands and challenged him to come out and fight. Father-in-law of Karan Singh advised him to escape away from there. So, coward Karan Singh ran away from there next day. He reached his home and became mad. A jackel can not become a lion after wearing lion's skin. He is a real lion whose heart is quite fearless. Swamiji was a real lion.

After Karanvas Swamiji travelled Chashni, Taharpur, Ahar and Anup city. Where he went, he condemned Idol worship, Shradh for the dead ones, and astrology etc.

Swamiji stayed in Anup city for four months. The people who came in his contact, could not forget him. He was a tall man with healthy and graceful body broad chest, beautiful and shining face, bright eyes, high and broad head. How can one forget such a character! He was wearing only a simple underwear. This (copeen) was the only cloth he had in winter, summer and rainy season. This copeen was sufficient to save his body. He got up very early in the morning (Brahm Muhurat). After necessary duties of body early morning, he performed Samadhi for hours together. After he delivered speech for the gathered public daily. He was fully satisfied with the Bhiksha only. Speech was delivered daily. Pandits come there for testing their wisdom. Some of them stayed out side the city. Those who entered the city dared not to come for debate. They were satisfied by abusing him from a great distance. Those who dared to reach him, either bowed before him after being satisfied or some others slipped away. Pandit Hira Vallabh and Pandit Tilak Ram were Idol worshipper. They had a debate many times but at last became his disciples (Shishya). They threw away the idol in Ganga. Following him many other persons also threw Samagri (articles) of Pooja (worship) into the river.

To be Continue.....

पृष्ठ 3 से आगे

लेकिन बीच-बीच में आपको स्वाद की लहरें भी हिलाती-डुलाती हैं। दुनिया में तरह-तरह के स्वाद हैं, चाहे वह जिहवा का स्वाद हो या त्वचा के स्पर्श का स्वाद हो, रंग-रूप का स्वाद या कानों से जो भी हम मधुर से मधुर सुनना चाहते हैं, उन रसीले शब्दों का स्वाद हो, सबके स्वाद भी अलग-अलग हैं। मधुरताएं भी सबकी अलग-अलग हैं। किसी को दुश्मन की निंदा सुनना ही मधुर लगता है, इससे अच्छा और मधुर उन्हें कुछ लगता ही नहीं। किसी-किसी व्यक्ति की आदत होती है कि वह आत्मप्रशंसा के शब्दों में ही रस लेता है, उसे प्रशंसा बहुत अच्छी लगती है। प्रत्येक मनुष्य के अपने माधुर्य अलग हैं। जहां भी आपका मन टिका हुआ है, उधर ही मन आपको भटका रहा है, इन सबसे अपने आपको रोकते हुए संयम करना है। नियंत्रण रखना है किंतु इसका मतलब यह नहीं है कि आप स्वाद लेना ही छोड़ दें। जब आप खाने के लिए जाएं तो खाने में पूरा स्वाद लीजिए, लेकिन हर समय ही बकरी की तरह से मुंह चलता रहे, प्लेट सामने रहे, हर समय कुछ-न-कुछ खा रहे हैं, चिड़ियाओं की तरह दाने चुग रहे हैं। जैसे कोई अपनी गाड़ी की टंकी में पैट्रोल डालते ही रहे, डालते ही रहे, जो भी पेट्रोल-पंप रास्ते में आए, उससे ही थोड़ा-सा पेट्रोल और डलवा लूं, थोड़ा-सा और डलवा लूं, तो यह उचित नहीं है। यह तो मन की हवस है, जो कभी पूरी नहीं होती। ऐसा व्यक्ति दिन-रात अशांत रहता है।

समयानुसार एक बार ठीक समय से भोजन ले लिया जाए तो वह ठीक है, लेकिन हर समय ही आप कुछ-न-कुछ खाते ही रहोगे तो वह शरीर को बीमार करेगा। ऐसे ही मन हर समय अलग-अलग स्वादों के पीछे रहे तो आप अपने संयम का आनंद नहीं ले सकेंगे। जो स्वाद भूख में है, वह किसी व्यंजन में नहीं है। जब अच्छी तरह से भूख जाग जाए तब आप खाना खाइए। उस समय आपको सूखी रोटी में भी जो स्वाद मिलेगा, वह आपको 56 प्रकार के व्यंजनों में भी आनंद नहीं मिल सकता। इसलिए नियंत्रण का स्वाद लीजिए, इसी तरह जागरूकता का स्वाद लीजिए, जब जागरूकता का स्वाद आएगा, तो आपको नियम का स्वाद भी आएगा।

संयमन शक्ति का जिसके भीतर नियंत्रण शक्ति है, वह नियम वाला अपने आप हो जाता है, उसका स्वयं के ऊपर स्वयं का अनुशासन चलता है फिर वह ठीक टाइम से रोज सुबह उठता है, उसके अंदर की घड़ी ठीक से काम करने लगती है। वह सोचने लगता है कि सूरज रोज समय से उगता है। मैं भी सूरज की तरह से तेजस्वी बनूंगा, ठीक समय से जागृत होकर अपने कार्य करुंगा। जिस तरह से हवाएं प्राणवायु बनकर बह रही हैं, ऐसे ही मैं भी खुशियां बांटता हुआ गतिशील रहूंगा। जिस प्रकार से चंद्रमा सबको शीतलता दे रहा है, शांति और सौंदर्य लेकर आता है, मैं भी संसार में चंद्रमा बनकर शांति-शीतलता बांटूगा, किसी आंख का कांटा नहीं बनूंगा, किसी के मन में नहीं चुभूंगा। फूल की तरह से खिलकर, सौंदर्य से युक्त होकर सारे संसार को शोभायमान करूंगा। मैं पिता परमात्मा की संतान हूं। उसके हाथ की बनाई हुई मूर्ति हूं, अपने आपको एक सौंदर्य से परिपूर्ण कर रहा हूं, फिर मन की सुंदरता का स्वाद लीजिए। आपके बोलने का सौंदर्य, आपका शांत होकर सुनने का तरीका, आपके उठने-बैठने का सौंदर्य सबका स्वाद मिलने लगेगा। फिर थोड़ा-सा और आगे बढ़िए और विचारिए कि मैं ज्योतिर्मय हूं, प्रकाशमय हूं, मैं अंधेरों में गुम क्यों हो जाऊं? मैं तो स्वयं प्रकाशित होकर, सारी धरती पर प्रकाश फैलाऊंगा। मैं ईर्ष्या-द्वेष में नहीं जलूंगा, दीए की तरह से ज्योतित हो जिउंगा, किसी का वैभव देखकर मुझे नहीं जलना है, बल्कि दीए की तरह से ज्योतिर्मय होना है, मुझे स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों के जीवन को भी रोशन करना है और अपनी जिंदगी को भी रोशन बनाना है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 25 दिसम्बर, 2023 से रविवार 31 दिसम्बर, 2023

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 27-28-29/12/2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 दिसम्बर, 2023

200वीं जयन्ती पर टंकारा में होगा प्रेरणाप्रद, ऐतिहासिक और भव्य

ज्ञान ज्योति पर्व - स्मरणोत्सव महासम्मेलन

10-12 फरवरी, 2024 : ऋषि जन्मभूमि टंकारा (गुज०)

प्रतिष्ठा में,

लाखों-करोड़ों लोगों तक महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज का सन्देश पहुंचाने के लिए मिसकॉल सेवा

प्रचार के लिए एक बोर्ड पर ये मिसकॉल नम्बर लिखकर आर्यसमाज में लगाए

मिस कॉल सेवा - सभा ने चार मिस कॉल सेवा आरंभ की हैं। यह अपने आप में महत्वपूर्ण कदम है और विशेष भी। आप अपने हर पैम्पलेट, पोस्टर, होर्डिंग, बैकड्रॉप, स्लाइड पर इनका अवश्य ही उल्लेख करें। यह सुविधा वर्तमान में सभा द्वारा संचालित समस्त योजनाओं एवं 200वीं जयन्ती से सम्बन्धित विशेष योजनाओं की जानकारी हेतु प्रारम्भ की गई है। आप देखेंगे कि इनके उपयोग से सहज ही लाखों लोगो तक ये सन्देश पहुंचते जाएंगे -

1. **जानिए, महर्षि दयानन्द को मिस कॉल करें - 8447 200 200** - यह सुविधा महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों के विषय में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रारम्भ की गई है।
2. **जानिए, यज्ञ के विषय में हर बात - मिसकॉल करें -9868 47 4747** - यह सुविधा यज्ञ से सम्बन्धित समस्त जानकारी के लिए प्रारम्भ की गई है। इसमें आपको इंग्लिश में और हिन्दी माध्यम से यज्ञ की सब जानकारी, यज्ञ का विज्ञान, यज्ञ का इतिहास, यज्ञ कैसे करें, यज्ञ क्यों करें, यज्ञ सीखने का तरीका, यज्ञ मन्त्रों की पुस्तक, आदि, सब इससे प्राप्त हो जाएगी।
3. **जानिए, वर्तमान में आर्यसमाज की गतिविधियां मिसकॉल करें - 8750200300** - सभा की अनेक योजनाएं चल रही हैं। 200वीं जयन्ती के लिए बनी योजना भी चल रही है। सोशल मीडिया, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशंस, सामाजिक सेवा के लिए और भी बहुत कुछ आप इस नए मिस कॉल नं. पर मिसकॉल करके सब कुछ जान पाएंगे और वहां से उनके लिंक पर जाकर उन योजनाओं से भी सीधे जुड़ सकेंगे।
4. **जानिए, आर्यसमाज को मिसकॉल करें - 9911 150 150** - यह सुविधा आर्य समाज के कार्यों, संगठन, इतिहास, व्यक्तिव और अन्य अनेक कार्यों की जानकारी के लिए तैयार किया गया है। यह मिसकॉल नम्बर 9 अप्रैल 2024 को आरम्भ किया जाएगा।

मिसकॉल सेवा का उपयोग - अपने स्मार्टफोन में इन मिसकॉल नं. को सेव करें (सेव करना न चाहें तो न करें - सेव न करने से भी यह अपना काम करेगा) और जिस विषय में भी आपको जानकारी चाहिए, उस पर कॉल करें। आपकी कॉल अपने आप कट जाएगी और आपको एक संदेश/मैसेज प्राप्त होगा।

आपके मोबाइल पर प्राप्त हुए उस मैसेज में दिए गएललिंक को टच करने पर सारी जानकारी खुल जाएगी। उनमें से जिस-जिस विषयों को आप डाउनलोड करना चाहें, उसे डाउनलोड कर लें। अब सब जानकारी आपके फोन पर होगी, आपसे भी यदि कोई इस प्रकार की जानकारी मांगता है तो आप उसे भी फारवर्ड कर सकते हैं और डिटेल में बता भी सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह